प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत स्थापित वाणी क्रियेशन, हस्तशिल्प एवं टैराकोटा, 'अम्बाला छावनी की सफलता की कहानी

कुमारी आभा नांगिया सुपुत्री श्री ओम प्रकाश नांगिया ने मास्टर ऑफ कम्पयूटर अप्लिकेशन की स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की एवं एक निजी फर्म इन्फोटेक सिस्टम, नोएडा में सोफ्टवेयर टैस्ट इन्जिनियर के पद पर कार्यरत् थी। इन्हे बचपन से ही सुन्दर एवं कलात्मक वस्तुंए बनाने का शौक था। इस कारण जब भी वह किसी सुन्दर व कलात्मक वस्तु को देखती तो वैसा ही स्वंय भी बनाने का प्रयास करती। उनकी इस जन्मजात प्रतिभा के कारण उनके परिवार के सदस्यों ने उनका उत्साह बढाया। परिवार के सदस्यों का प्रोत्साहन मिलने के कारण अपनी नौकरी के बाद जितना भी समय उन्हे मिलता उसमें वह टैराकोटा व हस्तशिल्प की कलात्मक वस्तुओं को बनाने में लगाती। जब परिवार के सदस्यों ने उनकी बनाई हुई सुन्दर व कलात्मक वस्तुओं को देखा तो उन्हे लगा कि क्यों न इस गतिविधि को व्यवसाय का रूप दिया जाए और इसका विपणन किया जाए। कुमारी आभा के पिता श्री ओम प्रकाश ने उन्हे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के बारे में बताया एंव सम्बन्धित विभाग एवं अधिकारियों से विस्तृत जानकारी हासिल करने के लिए उत्प्रेरित किया।

वर्ष 2011 में उन्होने वाणी क्रियेशन के नाम से प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत रू0 2.00 लाख का परियोजना प्रस्ताव हस्त शिल्प, टैराकोटा बनाने के लिए जिला उद्योग केन्द्र, अम्बाला छावनी को प्रेषित किया जिसे जिला कार्यबल समिति द्वारा स्वीकृत किया एवं भारतीय स्टेट बैंक, अम्बाला छावनी ने उन्हे सामान्य श्रेणी के अन्तर्गत रू0 2.00 लाख का परियोजना प्रस्ताव स्वीकृत कर दिया।

जैसे ही इकाई ने कार्य आरम्भ किया तो कुमारी आभा के साथ साफ्टवेयर फर्म में कार्यरत् उनकी सहयोगी भी उनके साथ हस्तशिल्प व कलात्मक कार्य में सम्मलित हो गई।

वर्तमान में इकाई में लगभग रू0 6.00–7.00 लाख के टैराकोटा, हस्तशिल्प वस्तुओं का उत्पादन किया जा रहा हैं। इकाई में 6 व्यक्ति कार्यरत हैं। इकाई में टैराकोटा, बर्तन, स्टैचू, सुन्दर व कलात्मक मूर्तियां, फूलदान एवं अन्य कलात्मक व सजावटी वस्तुओं का उत्पादन किया जा रहा है। इकाई ने अपनी स्वंय की वैबसाईट भी तैयार की है एवं इकाई ने अपने व्यापार को बढाने के लिए स्नैपडील के साथ अपनी इकाई का पंजीकरण करा लिया है। उन्हे लॉगइन आईडी भी प्राप्त हो गई है। शीघ्र ही उनके द्वारा उत्पादित माल की ऑनलाईन बिक्री शुरू हो जाएगी। इसके अतिरिक्त इकाई ने ईबे, फ्लिपकार्ट एंव एमाजॉन के साथ भी पंजीकरण करा लिया है। आने वाले दिनों में इकाई अपने उत्पादों की ऑन लाईन बिक्री करेगी।

इकाई के सुन्दर उत्पादों के दृष्टिगत अंग्रेजी के दैनिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान टाईम्स ने दिनांक 22.04.2012 को एक लेख उद्यमी एवं उनके उत्पादन के बारे में प्रकाशित किया। इकाई ने अब तक कंई प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया है जैसे कुल्लू, चण्डीगढ, पंचकुला, दिल्ली, मंडी, शिमला आदि। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला–2014 (आई.आई.टी.एफ.) में भी उन्होने अपने उत्पादों का प्रदर्शन व बिक्री की। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला–2014 में तो इकाई ने जितने भी उत्पादों का प्रदर्शन किया वह सब के सब बिक्री हो गये एवं लोगों ने उनके कार्य व कला को सराहा।

कुमारी आभा नांगिया की दूरदर्शता, इच्छाशक्ति एवं कठिन परिश्रम महिला शक्ति को नई राह दिखा रहा है जिससे कंई और महिला उद्यमियों को नई ऊर्जा मिलेगी।

0 0 0

VaniCreations

VaniCreations
Presents
Exclusive concepts in
Interiors & Exteriors
Designer Pots
Murals
Exquisite pottery
Glass Paintings
Sculptures
CERTIFICATE
KHADI PAVILION, IITF-2014

on

quotemartial

On one side, they are talking about trade and peace, on the other side, both (India and Pakistan) are involved in a weapons race.

MIRWAIZ UMER FAROOQ, chairman, All Parties Hurriyat Conference

Shaping India's dreams since 2008

SMALL-SCALE PUSH The PMEGP has helped many young entrepreneurs find a foothold, and created over 15 lakh jobs

Prasad Nichenametla
prasad.n@hindustantimes.com

NEW DELHI: Like many from her generation, Abha Nangia, wanted to become an entrepreneur — providing employment rather than being employed. The post-graduate in computers from Ambala had big dreams and proper plans. Money was the sole constraint.

"I left my job and started a terracotta pottery unit with whatever I could gather from my savings and parents. But it was just not enough. It was through the Prime Minister Employment Generation Programme (PMEGP) that I got a loan of ₹2 lakh and a subsidy of ₹40, 000, which let me establish my own venture," Nangia said.

> **Through PMEGP, I received a loan of ₹2 lakh and a subsidy of ₹40,000, which let me establish my own venture**
>
> ABHA NANGIA
> Entrepreneur

A year after it was set up, Vani Creations is receiving orders worth lakhs. Nangia provides employment to six workers, earning ₹3,000-6,000 per month, and her unit makes a profit of around ₹40,000 every month.

The scheme has turned around the lives of two lakh young entrepreneurs till now — running units that manufacture articles ranging from jewellery to handmade paper. Around 15 lakh jobs have been created in urban and rural India through these ventures.

The PMEGP, a credit-linked subsidy programme, was announced by Prime Minister Manmohan Singh on Independence Day-2008. Though it had a slow start, PMEGP has witnessed a good response over the last two years.

According to the Khadi and Village Industries Commission, the subsidy disbursed to beneficiaries was ₹905 crore against the target of ₹836 crore — with average disbursement of ₹1.9 lakh per unit — in 2011-12. "The scheme has now gathered steam," KS Rao, director, PMEGP, said.

In the budget, finance minister Pranab Mukherjee had announced a 23% hike for PMEGP, from ₹1,037 crore in 2011-12 to ₹1,276 crore in 2012-13.

PMEGP – PUSH TO EMPOWER

- PMEGP is a credit-linked subsidy programme launched in 2008 through the merger of the Prime Minister Rojgar Yojana (PMRY) and Rural Employment Generation Programme (REGP).
- Implemented by the Khadi and Village Industries Commission, the programme provides a subsidy of 15% to 35% of the total project cost — depending on social and geographical criteria.
- Maximum cost of the project is ₹25 lakh for manufacturing and ₹10 lakh for services.

The Nangia sisters run Vani Creations, a terracotta pottery unit, in Ambala Cant. HT PHOTO

Paving the road to a brighter future

- The scheme, which was launched in 2008 — the year of the global economic downturn — has helped create lakhs of first-generation entrepreneurs in the country.
- It has created over 15 lakh jobs in urban and rural India, one-third of which are in Uttar Pradesh, Bihar, Odisha and West Bengal — known for people migrating outside for jobs
- Aims to create 32-lakh jobs through four lakh micro-enterprises during the 12th Plan.